वितान

भाग 2

कक्षा 12 'आधार' पाठ्यक्रम के लिए
हिंदी की पूरक पाठ्यपुस्तक

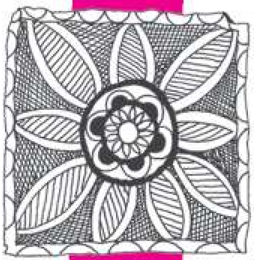

12071

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
मार्च 2007 चैत्र 1928

पुनर्मुद्रण
सितम्बर 2007 भाद्रपद 1929
दिसंबर 2008 पौष 1930
दिसंबर 2009 पौष 1931
नवंबर 2010 अग्रहायण 1932
जनवरी 2012 माघ 1933
मार्च 2013 फाल्गुन 1934
जनवरी 2014 पौष 1935
मार्च 2015 फाल्गुन 1936
दिसंबर 2015 पौष 1937
दिसंबर 2016 पौष 1938
नवंबर 2017 अग्रहायण 1939
दिसंबर 2018 अग्रहायण 1940

PD 120T RSP

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2007

₹ ??.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा चार दिशाएँ प्रिंटर्स (प्रा.) लि., जी-39-40, सैक्टर-3, नोएडा- 201 301 (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

ISBN 81-7450-696-9

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।

इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन सी ई आर टी के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बैंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकटः धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : एम. सिराज अनवर
मुख्य संपादक : श्वेता उप्पल
मुख्य व्यापार प्रबंधक : गौतम गांगुली
मुख्य उत्पादन अधिकारी : अरुण चितकारा
सहायक संपादक : एम. लाल
उत्पादन सहायक : सुनील कुमार

आवरण एवं चित्र
अरविंदर चावला

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास हैं। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित शिक्षा व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन कर सकेंगे। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितना वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस, और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् भाषा सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रो. नामवर सिंह और इस पुस्तक के मुख्य सलाहकार प्रो. पुरुषोत्तम अग्रवाल की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान किया; इस योगदान को संभव बनाने के लिए परिषद् उनके प्राचार्यों एवं उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ है जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में उदारतापूर्वक सहयोग दिया। परिषद् माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देती है। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्

नयी दिल्ली
20 नवंबर 2006

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, पूर्व अध्यक्ष, भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली

मुख्य सलाहकार

पुरुषोत्तम अग्रवाल, पूर्व प्रोफ़ेसर, भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, पूर्व प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, भाषा शिक्षा विभाग,
एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

सदस्य

अनामिका, रीडर, सत्यवती कॉलेज, नयी दिल्ली

अनूप कुमार, प्रोफ़ेसर, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर

उषा शर्मा, एसोशिएट प्रोफ़ेसर, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

दिलीप सिंह, प्रोफ़ेसर एवं कुल सचिव, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, चेन्नई

नीलकंठ कुमार, पी.जी.टी, राजकीय बाल विद्यालय, नयी दिल्ली

नीरजा रानी, पी.जी.टी., चंद्र आर्य विद्यामंदिर, ईस्ट ऑफ़ कैलाश, नयी दिल्ली

रवीन्द्र कुमार पाठक, असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, डाल्टन गंज

रवीन्द्र त्रिपाठी, पत्रकार, नयी दिल्ली

रामबक्ष, प्रोफ़ेसर, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

संजीव कुमार, वरिष्ठ प्रवक्ता, देशबन्धु कॉलेज, नयी दिल्ली

समीर वरण नंदी, प्रवक्ता, बी.एच.ई.एल. स्कूल, हरिद्वार

सदस्य-समन्वयक

संध्या सिंह, प्रोफ़ेसर, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

आभार

इस पुस्तक में रचनाओं को सम्मिलित करने की स्वीकृति देने के लिए सभी रचनाकारों/परिजनों, प्रकाशकों तथा मोअनजो-दड़ो संबंधी कुछ चित्रों के लिए ओम थानवी के प्रति हम कृतज्ञ हैं।

इस पुस्तक के निर्माण में सहयोग के लिए हम विशेष आमंत्रित शारदा कुमारी, प्रवक्ता, डाइट, आर.के. पुरम्, नयी दिल्ली तथा पुस्तक के निर्माण में तकनीकी सहयोग के लिए कंप्यूटर स्टेशन (भाषा विभाग) के प्रभारी परशराम कौशिक; कॉपी एडीटर समीना उसमानी और पूजा नेगी; प्रूफ़ रीडर कविता और कमलेश कुमारी एवं डी.टी.पी. ऑपरेटर कमल कुमार और सचिन कुमार के प्रति आभारी हैं।

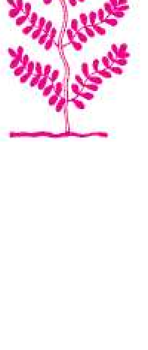

यह पुस्तक

शिक्षा का वितान (फैलाव) एक ऐसा तंबू है जो अपने भीतर पूरे विश्व को समेट लेता है। किसी प्रकार की सीमा या बंधन इसके आड़े नहीं आते। खासतौर से जब भाषा के संबंध में शिक्षा की बात की जाए तब अनुशासन (विषयगत) की सीमा भी नहीं रहती। बारहवीं कक्षा में हिंदी (आधार) पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए **वितान भाग 2** की परिकल्पना की गई तो भाषा, देश, विधा, आकार पर गहनता से विचार किया गया। किसी भी प्रकार की सीमा आड़े नहीं आई। रचनाएँ ऐसी चुनी गईं जो रुचिकर होने के साथ-साथ विशाल दुनिया के अतीत, वर्तमान और भविष्य से बच्चों को साक्षात्कार करा सकें।

इस पुस्तक में कुल चार रचनाएँ हैं। ये आकार में लंबी हैं। आत्मकथात्मक उपन्यास अंश और एक लंबी डायरी के कुछ पन्ने भी दिए गए हैं। ये वे रचनाएँ हैं जिन्हें स्वतंत्र रूप में पढ़ने के साथ-साथ पूरी रचना को पढ़ने की चाह पैदा होगी।

सिल्वर वैडिंग- एक लंबी कहानी। मनोहर श्याम जोशी की अन्य रचनाओं से अलग दिखती सी (पर है नहीं)। यह कहानी अपने शिल्प में जोशी जी के चिर परिचित भाषिक अंदाज़ और मुहावरों से युक्त है। आधुनिकता की ओर बढ़ता हमारा समाज एक ओर कई नयी उपलब्धियों को समेटे हुए है तो दूसरी ओर मनुष्य को मनुष्य बनाए रखने वाले मूल्य कहीं घिसते चले गए हैं। **जो हुआ होगा** और **समहाउ इंप्रापर** ये दो जुमले इस कहानी के बीज वाक्य हैं। **जो हुआ होगा** में यथास्थितिवाद यानी ज्यों का त्यों स्वीकार कर लेने का भाव है तो **समहाउ इंप्रापर** में एक अनिर्णय की स्थिति भी

है। ये दोनों ही भाव इस कहानी के मुख्य चरित्र यशोधर बाबू के भीतर के द्वंद्व हैं। ये दोनों ही स्थितियाँ हालात को ज्यों का त्यों स्वीकार कर बदलाव को असंभव बना देने की ओर ले जाती हैं। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि यशोधर बाबू इन स्थितियों का ज़िम्मेदार किसी व्यक्ति को नहीं ठहराते। वे अनिर्णय की स्थिति में हैं। यशोधर बाबू जहाँ बच्चों की तरक्की से खुश होते हैं वहीं **समहाउ इंप्रापर** यह भी अनुभव करते हैं कि वह खुशहाली भी कैसी जो अपनों में परायापन पैदा करे। इसी द्वंद्व के साथ-साथ इस कहानी को यशोधर बाबू के बहाने देश के **प्रापर** विकास में बाधक **समहाउ इंप्रापर** तत्त्वों की तलाश के रूप में भी पढ़ा जा सकता है।

जूझ- यह मराठी के प्रख्यात कथाकार डॉ. आनंद यादव का बहुचर्चित एवं बहुप्रशंसित आत्मकथात्मक उपन्यास है, जिसका एक अंश यहाँ दिया गया है। यह एक किशोर के देखे और भोगे हुए गँवई जीवन के खुरदरे यथार्थ और उसके रंगारंग परिवेश की अत्यंत विश्वसनीय जीवंत गाथा है। इस आत्मकथात्मक उपन्यास में जीवन का मर्मस्पर्शी चित्रण तो है ही, अस्त-व्यस्त-अलमस्त निम्नमध्यवर्गीय ग्रामीण समाज और लड़ते-जूझते किसान-मज़दूरों के संघर्ष की भी अनूठी झाँकी है।

यहाँ लिए गए अंश में हर स्थिति में पढ़ने की लालसा लिए धीरे-धीरे साहित्य, संगीत और अन्य विषयों की ओर बढ़ते किशोर के कदमों की आकुल आहट सुनी जा सकती है। जो निश्चय ही किशोर होते विद्यार्थियों के लिए हमकदम बन सकती है।

अतीत में दबे पाँव- इतिहास हमें दिशा दे सकता है तो ऐतिहासिक नगर सभ्यता के विकास को दिशा दे सकते हैं। इसी संदर्भ में यह रचना ओम थानवी की यात्रा वृत्तांत और रिपोर्ट का मिला-जुला रूप है, जो अब तक के ज्ञान में भारतीय भूमि ही नहीं विश्व फलक पर घटित सभ्यता की सबसे प्राचीन घटना को उतने ही सुनियोजित ढंग से पुनर्जीवित करता है, जितने सुनियोजित ढंग से उसके दो महान नगर मुअनजो-दड़ो और हड़प्पा बसे थे। लेखक ने टीलों, स्नानागारों, मृदभांडो, कुओं-तालाबों, मकानों व मार्गों से प्राप्त पुरातत्त्वों में मानव-संस्कृति की उस समझदार-भावात्मक घटना को बड़े इत्मीनान से खोज-खोज कर हमें दिखलाया है, जिससे हम इतिहास की सपाट वर्णनात्मकता से ग्रस्त होने की जगह इतिहास बोध से तर (सिक्त) होते हैं (जिस प्रकार सिंधु घाटी सभ्यता एक समय प्राणधारा से तर थी)। सिंधु सभ्यता के सबसे बड़े शहर मुअनजो-दड़ो की नगर-योजना अभिभूत करती है। वह आज के सेक्टर-मार्का कॉलोनियों के नीरस नियोजन की अपेक्षा ज़्यादा रचनात्मक थी, क्योंकि उसकी

बसावट शहर के खुद विकसने का अवकाश भी छोड़ कर चलती थी। पुरातत्त्व के निष्प्राण पड़े चिह्नों से एक ज़माने में, आबाद घरों, लोगों और उनकी सामाजिक-धार्मिक-राजनीतिक व आर्थिक गतिविधियों का पुख्ता अनुमान किया जा सकता है। वह सभ्यता ताकत के बल पर शासित होने की जगह आपसी समझ से अनुशासित थी। उसमें भव्यता थी, पर आडंबर नहीं था। उसकी खूबी उसका सौंदर्यबोध था, जो राजपोषित या धर्मपोषित न होकर समाज पोषित था। अतीत की ऐसी कहानियों के स्मारक चिह्नों का आधुनिक व्यवस्था के विकास-अभियानों की भेंट चढ़ते जाना भी लेखक को कचोटता है।

डायरी के पन्ने- यह डच भाषा में 1947 में प्रकाशित हुई थी। उसके बाद **द डायरी ऑफ़ ए यंग गर्ल** शीर्षक से 1952 में प्रकाशित हुई। **डायरी के पन्ने** नाम से यहाँ उसके कुछ अंश दिए जा रहे हैं। युद्ध के चलते इतिहास बनते हैं, बदलते हैं और बिगड़ते भी हैं। युद्ध से भौगोलिक नक्शा बदल जाता है। कई बार खास इलाकों के मनुष्यों, जाति और संस्कृति का नामोनिशान समाप्त कर देता है युद्ध। युद्ध का दंश कई पीढ़ियों को भी झेलना पड़ता है जैसे जापान।

1933 के मार्च महीने में फ्रैंकफर्ट के नगरनिगम चुनावों में हिटलर की नाज़ी पार्टी की जीत के तुरंत बाद जब वहाँ यहूदी-विरोधी प्रदर्शनों ने ज़ोर पकड़ा, तब फ्रैंक परिवार ने अपने को असुरक्षित महसूस करते हुए धीरे-धीरे अपना बसेरा नीदरलैंड्स के एम्सटर्डम शहर में स्थानांतरित कर लिया। वहाँ द्वितीय विश्वयुद्ध की शुरुआत (1939) तक तो सब कुछ ठीक-ठाक रहा, किंतु मई 1940 में नीदरलैंड्स पर जर्मनी का कब्ज़ा होने के बाद हालात बिगड़ने लगे। यहूदियों के उत्पीड़न का दौर शुरू हो गया। उन्हें तरह-तरह के भेदभावपूर्ण एवं अपमानजनक नियम-कायदों को मानने के लिए बाध्य किया जाने लगा। इन परिस्थितियों के बीच फ्रैंक परिवार 1942 के जुलाई महीने में अज्ञातवास पर चला गया, जिसकी योजना तो पहले ही बनाई जा

चुकी थी, लेकिन जिसका तात्कालिक कारण बना, ऐन की बड़ी बहन मार्गोट को 'सेंट्रल ऑफ़िस फॉर ज्यूइश इम्मीग्रेशन' से आया बुलावा। एक युवती के लिए इस बुलावे के खतरनाक मायनों को देखते हुए फ्रैंक परिवार ने तत्काल गोपनीय स्थान में जा छुपने का निर्णय लिया और वे अपने बदन पर कपड़ों की कई तहें जमाए (क्योंकि साज़ो-सामान लेकर निकलना उन्हें संदेहास्पद बना देता) पैदल (क्योंकि यहूदियों को किसी सवारी पर चलना मना था) उस जगह की ओर निकल पड़े। यह जगह थी, ऑटो फ्रैंक के दफ़्तर के भवन में पिछवाड़े की दो मंज़िलें, जिन तक पहुँचने की सीढ़ी अलमारियों की एक कतार के पीछे छिपी थी। यहाँ दो मित्र-परिवारों के चार और सदस्य उनके साथ रहने आ गए। इन आठ अज्ञातवासियों को फ्रैंक साहब के ऑफ़िस में काम करने वाले ईसाई कर्मचारियों की भरपूर मदद मिली और वे दो साल से कुछ ज़्यादा ही वक्त काट ले गए। 4 अगस्त, 1944 को किसी की दी हुई जानकारी के आधार पर गेस्टापो (हिटलर की खुफ़िया पुलिस) ने इस गोपनीय निवास पर छापा मारा, सभी लोग नाज़ियों के हत्थे चढ़ गए और उन्हें यहूदियों के लिए बने यातनागृह में भेज दिया गया। महायुद्ध में मित्र राष्ट्रों के हाथ जर्मनी की पराजय के बाद जब यातनागृहों में कैद यहूदियों को आज़ाद कराया गया (अप्रैल, 1945), तब फ्रैंक परिवार के सदस्यों में से सिर्फ़ पिता जीवित रह गए थे। नाज़ियों की सांप्रदायिक-नस्ली घृणा की आग ने जिन लाखों निर्दोष यहूदियों की आहुति ली, उनमें अपनी माँ और बहन के साथ ऐन भी शामिल थी।

ऐन फ्रैंक की बहुचर्चित डायरी दो साल के उसी अज्ञातवास के दरम्यान लिखी गई थी। अपने तेरहवें जन्मदिन-12 जून, 1942-पर जब उसे सफ़ेद और लाल कपड़े की जिल्दवाली नोटबुक दी गई, तभी उसने तय कर लिया था कि इस नोटबुक को वह अपनी डायरी बनाएगी। डायरी उसने उपहार में ही मिली एक गुड़िया-किट्टी-को संबोधित करके लिखनी शुरू की। गोपनीय जीवन की तब शुरुआत नहीं हुई थी, लेकिन महीने भर के अंदर वह नौबत आन पड़ी। ऐन का डायरी लिखना जारी रहा। आखिरी हिस्सा उसने पहली अगस्त, 1944 को लिखा, जिसके तीन दिन बाद वह दूसरे सात लोगों समेत नाज़ी पुलिस के हत्थे चढ़ गई। संयोग से उसकी डायरी पुलिस के हाथ नहीं लगी और यातनागृह से जीवित निकल आने वाले ऑटो फ्रैंक ने जब उसे पढ़ा, तो वे अपनी छोटी-सी बिटिया के लेखन की गहराई और नाज़ी दमन के दस्तावेज़ के रूप में उस लेखन के महत्त्व के कायल हो गए। उन्होंने हर संभव कोशिश करके 1947 में इस डायरी को प्रकाशित करवाया और शनैः-शनैः वह दुनिया की सबसे अधिक पढ़ी जाने वाली किताबों की सूची में शामिल हो गई।

यह डायरी इतिहास के एक सबसे आतंकप्रद और दर्दनाक अध्याय के साक्षात् अनुभव का बयान करती है। हम यहाँ उस भयावह दौर को किसी इतिहासकार की निगाह से नहीं, सीधे भोक्ता की निगाह से देखते हैं। और यह भोक्ता ऐसा है, जिसकी समझ और संवेदना बहुत गहरी तो है ही, उम्र के साथ आने वाले दूषणों से पूरी तरह अछूती भी है। इस पुस्तक के हिंदी अनुवाद में इसका परिचय देते हुए ठीक ही लिखा गया है-"इस डायरी में भय, आतंक, भूख, प्यार, मानवीय संवेदनाएँ, प्रेम, घृणा, बढ़ती उम्र की तकलीफ़ें, हवाई हमले के डर, पकड़े जाने का लगातार डर, तेरह साल की उम्र के सपने, कल्पनाएँ, बाहरी दुनिया से अलग-थलग पड़ जाने की पीड़ा, मानसिक और शारीरिक ज़रूरतें, हँसी-मज़ाक, युद्ध की पीड़ा, अकेलापन सभी कुछ है। यह डायरी यहूदियों पर ढाए गए ज़ुल्मों का एक जीवंत दस्तावेज़ है।"

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य]** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2][**राष्ट्र की एकता**

और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

विषय-सूची

आमुख iii
यह पुस्तक vii

1
सिल्वर वैडिंग
मनोहर श्याम जोशी 1

2
जूझ
आनंद यादव 21

3
अतीत में दबे पाँव
ओम थानवी 35

4
डायरी के पन्ने
ऐन फ्रैंक 53